भँवरलाल नाहटा अभिनन्दन ग्रन्थ (फोल्डर नं. ०१२०४१)

मुख्य टाइटल

शुभाशंसा

व्यक्तित्व -- ५५

श्री भँवरलाल नाहटा – शास्त्री शिवशंकर मिश्र -- ५७

संक्षिप्त जीवन परिचय - --- ७१

श्री भँवरलाल नाहटा – एक विहंगम दृष्टि --- ७२

श्री अभय जैन ग्रन्थालय, बीकानेर – श्रीलाल नथमल जोशी --------------------------------- ८०

कृतित्व -- ८७

श्रमण भगवान महावीर --- १

फलौधी की कुटिल लिपि --३

ढोलामारू रा दूहा के अर्थसंशोधन पर विचार -- ६

चौरासी संख्यात्मक बातें -- १४

लाभू बाबो -- ३६

मेरी रणथंभौर यात्रा --- ३८

उदयपुर का सचित्र विज्ञप्तिपत्र -- ४३

धातुमय जैन प्रतिमाएँ -- ५२

पावा समीक्षा की परीक्षा -- ७३

जैन लेखन कला --- ८०

भक्तामर स्तोत्र --- ११०

श्री कल्याणमन्दिर स्तोत्र -- ११४

रत्नाकर-पच्चीसी --११८

बंगाल के जैन पुरातत्त्व की शोध में पाँच दिन -- १२०

जैन चित्रकला -- १२६

सांकेतिक महाराष्ट्री लिपि का एक ग्रन्थ -- १४८

तरंगवती -- १५५

कसौटी -- १६८

आनंदजी कल्याणजी पेढी के संस्थापक श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज थे ------------------------ १७२

स्वर्गीय पूरण चन्दजी नाहर --- १७९

बहत्तरवीं कला की परीक्षा --- १८५

अहिच्छत्रा पार्श्वनाथ तीर्थ -- १८९

जैन धर्म में भक्ति और संकीर्तन --- २०२

श्रीमहिमाप्रभसागर प्रशस्ति --- २०५

योगीन्द्र युगप्रधान महामहिम श्रीसहजानंदघन गुरुदेवाष्टकम् ---------------------------------- २०९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अजबघर रा क्यूरेटर -- २१२
राजा सूरसिंघजी रो न्याय--- २१३
भगवान महावीर की जन्म भूमि – क्षत्रियकुण्ड --- २१५
बीकानेर का एक प्राचीन सचित्र विज्ञप्ति लेख -- २२४
जैन मुनियों के नामान्त पद या नन्दियाँ -- २२७
नाहटा वंश प्रशस्तिः --- २३५
आमन्त्रित शोध निबन्ध -- २३९
भारतीय संस्कृति और जैन धर्म साधना – डॉ. दामदोर शास्त्री ---------------------------------- १
जैन अध्यात्मवाद-आधुनिक सन्दर्भ में – डॉ. सागरमल जैन ---------------------------------- ७
श्रमण-संस्कृति का उदात्त दृष्टिकोण – डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव -------------------------------------१८
आत्मतत्त्व का साक्षात्कार – श्री चन्दन मुनि --- २३
जैन वाङ्मय और उसका क्रमिक विकास – श्री मदन कुमार महेता ---------------------------- २५
जैन दर्शन के आलोक में नयवाद और द्रव्यवाद – श्री रमेश मुनि ---------------------------- २९
लेश्या-एक विश्लेषण – श्री देवेन्द्र मुनि -- ३६
Prakrit Textual Criticism - Dr. Satyaranjan Banarjee -- 50
अपभ्रंश वैयाकरण हेमचन्द्र के दोहे – डॉ. आदित्य प्रचण्डिया --------------------------------- ५९
Thakkura Pheru and the Popularisation of Science in India in the 14th Century – Sreeramula Rajeshwar Sharma -- 63
पद्मसुन्दर की एक अज्ञात रचना-यदुसुन्दर – डॉ. सत्यव्रत-------------------------------------- ७३
अप्रकाशित आरामसोहाकहा (पद्य) – एक परिचय – डॉ. प्रेमसुमन जैन-------------------------८१
आत्मज्ञानी श्रीमद् राजचंद्र – नलिनाक्ष पंड्या -- ८७
राजस्थान का एक प्राचीन तीर्थ-जावर – श्री रामवल्लभ जैन --------------------------------- ९०
रामप्यारी का रिसाला – लक्ष्मी कुमारि चुण्डावत -- ९४
ढूंढाड़ का नामकरण – श्री राघवेन्द्र मनोहर --- ९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org